International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(1): 171-173

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(1): 171-173
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-12-2023
Accepted: 21-01-2024

डॉ. अवधेश कुमार
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अवधेश कुमार
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, दिल्ली, भारत

अष्टाध्यायी के सूत्रों में स्मृत नदियों का विश्लेषण

डॉ. अवधेश कुमार

प्रस्तावना

संसार के सर्वश्रेष्ठ वैय्याकरण पाणिनि हैं । यह केवल भारतीय ही नहीं मानते अपितु पाश्चात्य विद्वान भी मानते हैं। पाणिनि के व्याकरण के अध्ययन से पता चलता है कि वह अद्भुत है अद्वितीय है। यह जहाँ लौकिक संस्कृत को सूत्रों में बांधता है वहीं वैदिक संस्कृत को भी नियमवद्ध करता है । पाणिनि का व्याकरण पांच भागों में विभक्त है -1. अष्टाध्यायी २.धातुपाठ 3. उणादिकोष 4.लिङ्गानुशासनम् 5.गण पाठ । अष्टाध्यायी' जैसा कि इसके नाम से ज्ञात होता है कि इसमें' आठ अध्याय हैं। इसको इस प्रकार कह सकते हैं कि अष्टाध्यायी का विभाजन अध्यायों में है तथा अध्यायों का उपविभाजन पादों में है। इसमें आठ अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में 4 पाद हैं । इस प्रकार कुल 32 पाद हैं। पादों में सूत्रों का विभाजन है।

प्रथम - अध्याय - प्रथम पाद- 74, द्वितीय पाद- 73, तृतीयपाद -93, चतुर्थ पाद- 109 सूत्र ।

द्वितीय-अध्याय - प्रथम पाद - 71, द्वितीय पाद- 38, तृतीयपाद – 73, चतुर्थ पाद- 85 सूत्र

तृतीय -अध्याय - प्रथम पाद- 150, द्वितीय पाद- 188, तृतीयपाद – 176, चतुर्थ पाद- 117 सूत्र

चतुर्थ -अध्याय- प्रथम पाद- 176, द्वितीय पाद- 144 तृतीयपाद - 166, चतुर्थ पाद-144 सूत्र

पंचम-अध्याय- प्रथम पाद- 135, द्वितीय पाद- 140 तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद- 160 सूत्र

षष्ठ-अध्याय- प्रथम पाद- 217, द्वितीय पाद- 199 तृतीयपाद - 138, चतुर्थ पाद- 175, सूत्र

सप्तम-अध्याय- प्रथम पाद- 103, द्वितीय पाद- 118, तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद-97 सूत्र

अष्टम-अध्याय- प्रथम पाद- 74, द्वितीय पाद- 108, तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद-67 सूत्र

अष्टाध्यायी के प्ररम्भ में 14 प्रत्याहार सूत्र हैं, जिन्हें माहेश्वर सूत्र भी कहते हैं। इस प्रकार अध्यायायी में सूत्रों की संख्या - 3979 है। यह संख्या रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित अष्टाध्यायी के अनुसार है [1]।

संस्कृत व्याकरण का मूर्धन्थ ग्रन्थ है। इसमें वैदिक एवं लोकिक संस्कृत को समझने के लिए पाणिनि ने सूत्रों का प्रणयन किया हुआ है। अपने व्याकरण शास्त्र के इतिहास में पाणिनि का काल पंडित युधिष्ठिर मीमांसक ने 2900 विक्रम पूर्व माना है। उस समय अष्टाध्यायी का प्रणयन करते वक्त देश का भौगोलिक परिदृश्य क्या रहा होगा। इसका दिग्दर्शन अष्टाध्यायी में प्राप्त होता हें पाणिनि ने अष्टाध्यायी में कतिपय नदियों की चर्चा की है। उनका दिग्दर्शन इस शोधपत्र का विषय है।

भिद्य नदी - "भिद्यद्धयौ नदे"[2] सूत्र पर 'भिद' धातु से क्यप् प्रत्यय नदी अभिधेय होने पर निपातित किया है। इससे 'भिद्य नदी वाचक शब्द बनता है। जिसका अर्थ है किनारों को तोड़ने वाली नदी ।

उद्धय नदी - पाणिनि ने "भिद्यद्धयौ नदे" सूत्र पर उज्झ तथा उन्दी धातु से नदी अभिधेय होने पर क्यप् प्रत्यय निपातित किया है। उन्दी के नकार का लोप एवं 'द' को 'ध' निपातित होकर 'उद्धय' शब्द बनता है। जिसका अर्थ है तटों को गीला करते वाली नदी। इस प्रकार पाणिनि ने एक सूत्र में 'भिद्य' तथा 'उद्धय' नदियों का वर्णन किया है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'उद्धय' नदी यो वर्तमान की 'उज्झ नदी' को माना है। ये दोनों नदियों पञ्जाव में बहती थी तथा रावी में जाकर मिलती थी।

विपाशा नदी - पाणिनि ने आष्टाध्यायी के सूत्रों में कई प्रकार के कुओं का वर्णन किया है। 'उदक् च विपाशः'[3] है। सूत्र पर विपाश (व्यास) नदी के उत्तरी किनारे पर जो कुएँ हैं उनसे अञ् प्रत्यय का विधान किया है। सूत्र में 'उत्तर' का पाठ होने से दक्षिण के किनारे वाले कुओं कहना होगा तो अण् प्रत्यय हो जायेगा रुप दोनों का एक ही होगा। जैसे दत्तेन निर्वृतः कूपः दात्तः, गौप्तः। अञ् और अण् में केवल स्वर का अन्तर है। जब अञ् होगा तो ञ्नित्यादिर्नित्यम्'[4] से आद्युदात्त स्वर होगा तथा जब अण् होगा तब 'आद्यदात्तश्च'[5] से आन्तोदात होगा। इस प्रकार पाणिनि विपाशा नदी के उत्तर और दक्षिण के वर्णन प्रसंग में विपासा नदी का वर्णन करते हैं।

सुवास्तु तथा वर्णु नदी - 'सुवास्त्वादिभ्योऽण्'[6] सूत्र पर सुवास्तु नदी के समीप होने वाले नगरों को 'सौवास्तवम्' कहा है। तथा वर्णु नदी के समीप में होने वाले नगरों को वार्णवम् कहा है। इसमें सुवास्तु आदि प्रातिपदिको से चातुरर्थिक 'अण्' प्रत्यय किया है। इस प्रकार इस सूत्र में सुवास्तु तथा वर्णु नदी का वर्णन प्राप्त होता है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने सुवास्तु नदी को वर्तमान "स्वात" से जोड़कर देखा है।

उदुम्बरावती - अष्टाध्यायी के सूत्र 'नद्यां मतुप्'[7] की वृत्ति लिखते हुए वामन जयादित्य ने उदुम्बरावती नदी को उदाहरण रुप में प्रस्तुत किया है। उदुम्बर शब्द का अर्थ है गूलर ऐसी उस समय कोई नदी थी जिसके तट पर गूलर के पेड़ पाये जाते थे। पाणिनि ने 'राजन्यादिभ्यो वुञ्' [8]सूत्र पर राज्यन्यादिगण में उदुम्बर शब्द का उल्लेख किया है। उदुम्बर देश में रहने वाले क्षत्रिये 'औदम्वरक' कहे जाते हैं। अतः उदुम्बर देश की कोई नदी रही होगी जिसे पाणिनि ने 'उदुम्बरावती' कहा है।

'मशकावती'- 'नद्यां मतुप्' [9] सूत्र पर काशिका में मशकावती नदी को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है। मशक शब्द से 'मतुप्' विधान करके ''मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम्''[10] सूत्र से दीर्घ 'मादुपधायाश्च.''[11] सूत्र से 'म' को 'व' तथा 'उगितश्च' [12] से डीप् प्रत्यय करके 'मशकावती' सिद्ध किया है। मशक शब्द का अर्थ है मच्छर जिस नदी के तट पर मच्छरों का बाहुल्य हो वह नदी 'मशकावती' कहीं जाती थी।

वीरणावती - काशिका में 'नद्यां मतुप्'[13] सूत्र पर की वृति में वीरणावती नदी को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है। 'वीरण' शब्द का अर्थ है औषधी रुप में प्रयुक्त होने वाली घास जो शीतलता प्रदान करती है। इस प्रकार की घास जिस नदी के तट पर होती थी रही नदी 'वीरणावती' रही होगा।

पुष्करावती- अष्टाध्यायी के 'नद्यां मतुप्' [14]सूत्र पर वृत्ति लिखते हुए काशिका के व्याख्याता वामन जयादित्य ने 'पुष्करावती' नदी को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है।

पुष्कर शब्द का अर्थ नीलकमल है। पाणिनिकाल में इस प्रकार नदी रही होगी जिसके तट पर नीलकमल प्रचुर मात्रा में पाये जाते थे उसे 'पुष्करावती' कहा गया है।

इक्षुमती- पाणिनि के 'नद्यां मतुप्' [15] सूत्र पर काशिका में इक्षुमती नदी को उदारहण रूप् में प्रस्तुत किया है। इक्षु शब्द का अर्थ 'ईख' गन्ना होता है। जिस नदी के तट पर गन्ना होता था उस नदी को पाणिनिकाल में इक्षुमती कहा गया है। यह नदी फरूखावाद जिले में बहती है इसे आजकल 'ईखस' नदी कहते हैं।

द्रुमती- नद्यां मतुप्[16] सूत्र की व्याख्या करते हुए कशिका में दुरमती नदी को उदाहरण रूप् में प्रस्तुत किया है। 'दुरमती' को घोहा नदी कहा जाता है जो कुमाऊँ से निकलकर वरेली शाहजहांपुर होते हुए हरदोई जिले में रामगंगा में मिलती है। ऐसी नदी जिसके किनारे पर वृक्षों की शाखायें हो उस नदी को द्रुमती कहा जाता है।

रथस्था- वैय्याकरण निकाय में ऐसा प्रसिद्ध है कि रामगंगा नदी का ही प्राचीन नाम रथस्या है। यह सब जानते ही हैं कि रामगंगा कुमाऊँ से निकलती है तथा बरेली फरुखाबाद होती हुई हरदोई जाकर गंगा में मिल जाती है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में ''पारस्कर प्रभृतीनि च संज्ञायाम' [17] सूत्र के उदाहरण में काशिकाकार ने 'रथस्या' नदी को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है।

चर्मणवती- ''आसन्दीवदष्ठीवत् चर्मणवती''[18] सूत्र पर पाणिनि ने चर्मणवती' नदी का उल्लेख किया है चर्मणवती की पहिचान चम्बल नदी के रूप में की गई है। इसी में 'चर्मणवती' नदी का उल्लेख है।

अजिरवती- ''मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम्''[19] सूत्र के प्रत्युदाहरण में काशिकाकार ने अजिरवती नदी का उल्लेख किया है। इसी के साथ 'खदिरवती', हंसकारण्डववती तथा चक्रवाकवती नदियों का उल्लेख किया है।

शरावती- अष्टाध्यायी के 'एड् प्राचां देशे'[20] सूत्र पर प्राच्य और उदीच्य देशों के विभाजन प्रसंग में काशिकाकार ने शरावती नदी उल्लेख करके उसको प्रणाम प्रस्तुत किया है-

प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदकं यथा।
विदुषां शब्दसिद्धयर्थं सा नः पातु शरावती।।[21]

सिन्धुनदी- अष्टाध्यायी में 'सिन्धपकराभ्यां कन्'[22] सूत्र पर सिन्धु नदी का उल्लेख किया हैं यह नदी कैलाश के पश्चिमी तट से निकलकर कश्मीर को दो भागों में विभक्त करती है। वहां से 'दरद्' देश से होती हुई मैदानी भाग में प्रवाहित होती है। काशिकाकार ने 'प्रभवती' सूत्र पर 'दारदी सिंधु' उदाहरण दिया है। जिनके पूर्वज सिन्धु नदी के तट पर रहते थे वे लोग सैन्धव कहलाते थे जिसको वर्णन पाणिनि ने ''सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञों'[23] सूत्र पर किया है।

गंगा- वैदिक वाङ्मय में गंगा का महत्व सर्वोपरी है तमाम हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र गंगा को माना है पाणिनि अष्टाध्यायी पर जितने वृत्तिग्रन्थ लिखे गये लगभग सब में गंगा का नाम समाहित है। 'पारेमध्ये षष्ठ्यावा'' [24]सूत्र पर लगभग सभी वृत्ति लेखकों ने पारेगङ्गम, मध्येगङ्गम, गङ्गापारम, आदि उदाहरणों में गंङ्गा का उल्लेख किया।

सन्दर्भ

1. अष्टाध्यायी सूत्रपाठः, पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु,रामलाल कपूर ट्रस्ट |
2. अष्टाध्यायी 3/1/115
3. आष्टा 4/2/74
4. आष्टा 6/1/197
5. अष्टा 3/1/3
6. अष्टा 4/2/77
7. अष्टा 4/2/85
8. अष्टा 4/2/53
9. अष्टा 6/3/119
10. अष्टा 8/2/1
11. अष्टा 4/1/6
12. अष्टा – 4/2/85
13. वही
14. वही
15. वही
16. अष्टा 6/1/157
17. अष्टा 8/2/12
18. अष्टा 6/3/119
19. अष्टा 1/1/७५
20. एङ् प्राचम् देशे सूत्र पर कसकिका की कारिका
21. अष्टा 4/3/32
22. अष्टा 4/3/93
23. अष्टा 2/1/18